शैक्षिक संवाद : सम्भावनाएँ अपार

कालू राम शर्मा

शिक्षकों की प्रोफ़ेशनल तैयारी के लिए विभिन्न प्रयास किए जाते रहे हैं। इस लेख में ऐसे ही एक प्रयास के तहत संकल्पित 'शैक्षिक संवाद' कार्यक्रम, उसकी मूल दृष्टि और चलाए जाने के अनुभव हैं। लेख बताता है कि शिक्षकों की तैयारी के लिए बनाए गए किसी भी कार्यक्रम के लिए यह ज़रूरी है कि वह न केवल स्कूल और कक्षा में हुए उनके अनुभवों, सामने आई चुनौतियों को साझा करने की ऐसी जगह उपलब्ध करवाए जहाँ उनके इन अनुभवों को ध्यान से सुना जाए, उनके सन्दर्भ और परिस्थितियों को समझा जाए व फिर चर्चा की जाए, ताकि सही मायने में उनको मदद मिल पाए। इस संवाद कार्यक्रम के तहत शिक्षकों के साथ किन-किन विषयों पर और कैसे काम किया गया, इसके उदाहरण भी लेख में दिए गए हैं। सं.

मध्यप्रदेश में जन शिक्षा केन्द्र (क्लस्टर रिसोर्स सेंटर) स्तर पर शिक्षकों की शैक्षिक तैयारी के लिए 'शैक्षिक संवाद' कार्यक्रम चलाया जा रहा है। 'शैक्षिक संवाद' कार्यक्रम के तहत सोच यह है कि शिक्षक जन शिक्षा केन्द्रों पर एकत्र हों, कक्षा-कक्ष में सीखने-सिखाने को लेकर अपने अनुभव साझा करें, और अपनी तैयारी करें ताकि कक्षाओं में शैक्षिक समृद्धता स्थापित की जा सके।

उल्लेखनीय है कि शिक्षकों की शैक्षिक तैयारी की जड़ें कोठारी आयोग (1964-66) में समाई हुई हैं। जहाँ शिक्षकों के अलगाव को दूर करते हुए उनकी पेशेवर तैयारी इस तरह से की जा सके कि वे कक्षाओं में सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को बेहतरी से अंजाम दे सकें। इसके लिए कोठारी आयोग ने शाला संकुल (स्कूल कॉम्पलेक्स) का विचार रखा था जहाँ एक उच्चतर माध्यमिक स्कूल के इर्द-गिर्द के प्राथमिक व माध्यमिक स्कूलों में सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में जान फूँकी जा सके। तब स्कूली शिक्षा में शिक्षकों की पेशेवर तैयारी के मामले में इसे एक नवाचार के रूप में देखा गया था।

लिहाज़ा, शैक्षिक संवाद को सेवाकालीन प्रशिक्षण के एक सतत हिस्से के रूप में देखा जा रहा है जहाँ शिक्षकों को एकमुश्त प्रशिक्षण के अलावा जन शिक्षा केन्द्र स्तर (भौगोलिक रूप से शाला संकुल का ही एक स्वरूप) पर लगातार अकादमिक चर्चाओं के अवसर प्राप्त हों। सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण का स्वरूप हमारे यहाँ एकमुश्त तासीर का रहा है जहाँ ये ज़िला व विकासखण्ड स्तर पर अमूमन ग्रीष्मकालीन अवकाश की समाप्ति से लगाकर स्कूल खुलने के पहले-दूसरे महीने में आयोजित होते हैं। इस प्रकार जन शिक्षा केन्द्र स्तर पर शिक्षकों की पेशेवर तैयारी सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण का ही एक विस्तारित रूप है। जन शिक्षा केन्द्र पर शिक्षकों की बैठकों का महत्त्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यहाँ शिक्षकों की अपनी कक्षाओं में शिक्षण की रोज़मर्रा की तैयारी और समस्याओं पर बातचीत होती है।

कुल मिलाकर शिक्षक उन प्रक्रियाओं से गुज़रें जो उन्हें अपनी-अपनी कक्षाओं में प्रतिबिम्बित करना है। बेशक, शिक्षकों की सतत तैयारी मायने रखती है।

दरअसल, पिछले कुछ दशकों में शिक्षकों की पेशेवर तैयारी को भारत समेत कई देशों ने तो पहचाना लेकिन इसे विडम्बना कहें कि भारत में शिक्षकों की तैयारी के रास्ते में सबसे बड़ी अड़चन इसका टॉप डाउन होना है।

हमारे देश में शिक्षक प्रशिक्षण की व्यवस्था सोपानी (कैस्केड) मोड में चलती है। प्रदेश स्तर पर विशेषज्ञों का समूह होता है जो ज़िले के प्रशिक्षकों को तैयार करता है। फिर वे ज़िले में शिक्षकों को प्रशिक्षित करते हैं। अन्तिम रूप में जो शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करता है वह बच्चों के साथ कार्य करता है। ज़ाहिर है कि कैस्केड मोड में दुर्बलता की प्रबल सम्भावनाएँ होती हैं। और दरअसल, ऐसा होता भी रहा है। एक वजह यह भी पहचानी गई है कि शिक्षक प्रशिक्षणों में जो कुछ भी होता है वह कक्षाओं के कारोबार से कम ताल्लुक रखता है। शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षकों को ऐसे सहयोगी के रूप में नहीं देखता जो बच्चों को अर्थपूर्ण सीखने की ओर प्रेरित कर सके।

शैक्षिक संवाद : असल धरातल पर

एक जन शिक्षा केन्द्र में लगभग 20-25 प्राथमिक स्कूल व लगभग 10-12 मिडिल स्कूल होते हैं। इनकी शैक्षिक व्यवस्था की ज़िम्मेदारी जन शिक्षा केन्द्र की होती है। इन केन्द्रों पर आयोजित बैठकों में काम करते हुए समझ में आया कि यह एक ऐसी उपजाऊ ज़मीन है जहाँ शिक्षकों के साथ स्कूली शिक्षा के बरअक्स विविधतापूर्ण और सार्थक कार्य किए जा सकते हैं। एक तो शिक्षकों का जो भागीदार समूह होता है वह एक ही क्षेत्र के आसपास के स्कूलों के शिक्षकों का होता है। दूसरा, जन शिक्षा केन्द्र एक ऐसी जगह होती है जो शिक्षकों के लिए बेगानी नहीं होती। तीसरी बात यह कि यहाँ के स्थानीय संसाधनों, जिसमें

होशंगाबाद विज्ञान

शाला संगम केन्द्र का धरातल पर क्रियान्वयन

स्कूल कॉम्पलेक्स का सपना भारत में पूरी तरह से हक़ीक़त में तब्दील नहीं हो सका लेकिन एक कोशिश 1972 में होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम (होविशिका) के ज़रिए हुई जिसका असर भी देखने में आया।

होविशिका, मिडिल स्कूलों में विज्ञान शिक्षण का एक कार्यक्रम था जहाँ बच्चे विज्ञान को रटने के बजाय प्रयोग करके सीखें। खोज व पर्यावरण पर आधारित इस कार्यक्रम में बच्चे अपने पर्यावरण से अन्तर्क्रिया करते हुए प्रयोग करके ऐसी परिकल्पनाएँ गढ़ते थे कि वे ख़ुद जाँच सकें। इस कार्यक्रम के केन्द्र में शिक्षक की पेशेवर तैयारी को अहम माना गया था। विज्ञान शिक्षकों को एकमुश्त प्रशिक्षण (21 दिनों का) दिया जाता था। यह भी तय किया गया कि शिक्षकों की रोज़मर्रा की तैयारी के लिए क्षेत्रीय स्तर पर मासिक बैठकों का आयोजन आवश्यक है। इनका प्रयोजन एकमुश्त सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में शिक्षकों को विज्ञान शिक्षण के पाठ्यक्रम की बारीक़ियों जैसे— विषयगत समझ, प्रयोग करना, प्रयोगों से निष्कर्ष निकालना, परिभ्रमण पर जाना और इसके महत्त्व की समझ व तैयारी से लगाकर शिक्षण की विधि से लैस करना होता है।

(अगर इस कार्यक्रम के बारे में और अधिक जानना हो तो सुशील जोशी द्वारा लिखित व एकलव्य द्वारा प्रकाशित *जश्न–ए–तालीम* को सन्दर्भित किया जा सकता है।)

आसपास का परिवेश— जल, जंगल, खेती-बाड़ी, नदी-तालाब, स्थानीय ऐतिहासिक व प्राकृतिक स्थल शामिल हैं, का परिभ्रमण कर इन्हें सीखने-सिखाने का ज़रिया बनाया जा सकता है जो असल में कक्षा शिक्षण में प्रतिबिम्बित किए जाने की आज की ज़रूरत है।

मध्यप्रदेश के निमाड़ अंचल के आदिवासी ज़िले खरगौन में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की भागीदारी शिक्षकों को शैक्षिक सम्बल प्रदान करने को लेकर प्रारम्भ से ही रही है। इस दौरान जन शिक्षा केन्द्रों पर शिक्षकों के साथ शैक्षिक विमर्श की क्या सम्भावनाएँ हो सकती हैं और इसे कैसे एक जीवन्त मॉडल के रूप में विकसित किया जा सकता है, इसकी कुछ समझ बनाई जा सकी।

विकासखण्ड स्रोत समन्वयक व जन शिक्षकों के साथ बैठकों में साझी समझ बनी कि मासिक बैठकों में शिक्षकों को अपने अनुभवों व विचारों को व्यक्त करने के अधिक-से-अधिक मौक़े मिलें, उनकी बातों को शिद्दत से सुना जाए, और उन्हें सम्मान मिले। शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में क्या पढ़ाना है और उन्होंने पिछले दिनों में क्या पढ़ाया, इसकी समीक्षा करने की गुंजाइश हो। वास्तव में, जन शिक्षा केन्द्र की संकल्पना में यह शामिल है कि ये शिक्षकों के लिए संसाधन केन्द्र हैं जहाँ वे अपने संगी-साथियों के साथ शैक्षिक विमर्श कर सकेंगे। शिक्षकों की शैक्षिक तैयारी के लिए 'शैक्षिक संवाद' मंच की सार्थकता और उपयोगिता के कुछ उदाहरण यहाँ उल्लेखनीय हैं।

पर्यावरण का पाठ

पर्यावरण अध्ययन के लिए यह ज़रूरी है कि शिक्षक बच्चों को कक्षा से बाहर ले जाएँ और उन्हें अपने परिवेश को समझने के मौक़े उपलब्ध कराएँ। इस लिहाज़ से यह ज़रूरी समझा गया कि शिक्षकों को इस प्रक्रिया से गुज़ारा जाए।

पक्षियों से जान पहचान

जन शिक्षा केन्द्र पर शिक्षकों के समूह ने एक तालाब के किनारे की ओर क़दम बढ़ाए। यहाँ उन्होंने पक्षियों का अवलोकन किया और पक्षियों की पहचान, व्यवहार, उड़ान, आवाज़ को क़रीब से निहारा। उल्लेखनीय है कि पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक में पक्षियों पर एक अध्याय शामिल किया गया है। शिक्षकों को पक्षी दर्शन की प्रक्रिया से गुज़ारा गया ताकि वे अपनी कक्षा के बच्चों को अपने आसपास के पक्षियों का अवलोकन करने के लिए प्रेरित कर सकें।

अवलोकन के बाद कक्षा में लौटकर आए और पक्षियों को लेकर सवाल-जवाब हुए। जैसे— टिटहरी पेड़ों पर क्यों नहीं बैठ पाती? क्या कौआ काणा होता है? इत्यादि।

पाठ्यपुस्तक के अध्याय ('चीं, चीं करती आई चिड़िया', कक्षा चौथी) को पढ़ा गया व एक कार्ययोजना तैयार की गई कि हम बच्चों के साथ कैसे इस कार्य को अंजाम दे सकते हैं। इस कार्ययोजना में प्रमुखता से यह बात उभरी कि बच्चों को अपने आसपास पक्षियों के अवलोकन करने के लिए सैर पर ले जाया जाए। साथ ही

बच्चों के अपने परिवेश के पक्षियों के अवलोकनों को साझा करने पर ज़ोर दिया जाए।

पेड़–पौधों का अवलोकन

एक जन शिक्षा केन्द्र पर शिक्षकों के साथ पेड़-पौधों के अध्ययन का सत्र आयोजित किया गया। पेड़-पौधों के अवलोकन के लिए परिभ्रमण पर सभी शिक्षक गए। शिक्षकों ने पेड़ों की पत्तियों, फूलों, जड़ों आदि का अवलोकन किया।

शिक्षकों ने पत्तियों की जमावट का अवलोकन किया कि वे किस तरह से शाखा या तने पर जमी होती हैं।

इसी दौरान अवलोकन पर आधारित एक और प्रश्न उभरा कि पेड़-पौधों में नई कोंपलें लाल या मेहरून रंग की ही क्यों होती हैं? इस प्रश्न पर कक्षा में आकर चर्चा की गई।

भाषाई कौशलों के विकास के लिए रीडिंग कार्नर

बच्चों को पढ़ने-लिखने के अधिक-से-अधिक अवसर उपलब्ध कराने के लिए रीडिंग कार्नर की स्थापना और उसकी कार्यप्रणाली पर बातचीत की गई। शिक्षकों के साथ काम करने के दौरान देखने को मिला कि अधिकांश स्कूलों में बाल साहित्य के तहत एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित *बरखा* सीरीज़ की किताबों के सेट के अलावा अन्य बाल साहित्य की किताबें भी मौजूद हैं। लेकिन इनका इस्तेमाल बच्चों की पढ़ने की क्षमताओं को विकसित करने के लिए उचित ढंग से नहीं हो पा रहा है। आमतौर पर सप्ताह में एक दिन अन्य किताबों को पढ़ने का पीरियड भर लगा दिया जाता है। शिक्षकों ने शैक्षिक संवाद की बैठक में तय किया कि इसे सप्ताह में एक पीरियड में बाँधने के बजाय भाषा शिक्षण की कक्षा का केन्द्रीय बिन्दु बनाया जाए। अगर बच्चों को पढ़ना सिखाना है तो उन्हें उनकी दिलचस्पी की अधिक-से-अधिक और विविधतापूर्ण किताबें उपलब्ध करवाने की हम कोशिश करेंगे।

कक्षा में प्रिंट रिच माहौल बनाने के लिए कार्य किया गया। बाल कविताओं व कहानियों के पोस्टर्स बनाए गए ताकि कक्षाओं में उनका इस्तेमाल किया जाए।

बैठकों में किए गए काम का असर हुआ और अगली बैठकों में शिक्षकों ने अनुभव साझा किए कि उन्होंने अपनी कक्षाओं में बाल साहित्य उपलब्ध करवाया व अमुक पुस्तक पर बच्चों के साथ पढ़ना सीखने के लिए कार्य किया।

गांधी व प्रेमचंद के बरअक्स

एक जन शिक्षा केन्द्र में प्रेमचंद जयन्ती पर प्रेमचंद की कहानियों पर शिक्षकों से बातचीत की गई। स्कूली पाठ्यक्रम में प्रेमचंद की जानी-पहचानी कहानी 'ईदगाह' पर बातचीत की गई। 'बड़े भाई साहब' कहानी के नाट्य रूपान्तरण का वीडियो दिखाया गया व प्रेमचंद के साहित्य में योगदान पर बातचीत हुई। बातचीत यह भी हुई कि पाठ्यक्रम में कहानियों को शामिल करने का क्या महत्त्व है और इनपर हम कैसे कक्षाओं में बच्चों के साथ काम कर सकते हैं।

ये कुछ मिसालें हैं जो जन शिक्षा केन्द्र स्तर पर शिक्षकों को बाँधकर रख सकी थीं। शिक्षकों द्वारा सीखने-सिखाने को लेकर बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने का परिणाम यह भी हुआ कि कुछ जन शिक्षा केन्द्रों पर दो दिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन भी किया जा सका।

इस पूरी प्रक्रिया में बच्चों की बैठक व्यवस्था से लगाकर कई फुटकर मगर अहम मसलों पर भी बातचीत हो सकी। मसलन, कक्षा में बैठक व्यवस्था कैसी होनी चाहिए? क्या यह उचित है कि कक्षा में बच्चों को क़तारबद्ध बैठाया जाए? कक्षा में बच्चों को क़तारबद्ध बैठाने की बजाय अगर गोल घेरे में बैठाया जाए तो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया पर क्या असर पड़ेगा आदि को शिक्षकों ने समझने की कोशिश की।

स्कूल कॉम्पलेक्स और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020

कोठारी आयोग के गठन के बाद तमाम शिक्षा नीतियाँ शिक्षकों की शैक्षिक हैसियत को समृद्ध बनाने की सिफ़ारिशें करती रही हैं। शिक्षकों की सतत शैक्षिक तैयारी की पहचान तो हो सकी मगर सरकारें इसे सही मायनों में धरातल पर उतार पाने में नाकामयाब रही हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2019* के ड्राफ़्ट मसौदे में भी स्कूल कॉम्पलेक्स को सशक्त बनाने की बात को पुन: तल्ख़ी से रेखांकित किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है कि स्कूलों के समूहों को स्कूल कॉम्पलेक्स का रूप दिया जाए जिससे संसाधनों का साझा उपयोग सुगम बने और स्थानीय स्तर पर कुशल एवं प्रभावी गवर्नेंस सुनिश्चित हो। नई शिक्षा नीति चिन्ता व्यक्त करती है कि भारत ने प्राथमिक स्तर पर लगभग शत प्रतिशत नामांकन हासिल कर लिया है। इस सन्दर्भ में यह प्रशंसनीय उपलब्धि है मगर काम अभी पूरा नहीं हुआ है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, कोठारी आयोग की ही उस बात को कहती है कि स्कूल कॉम्पलेक्स का उपयोग उस घोर अलगाव को समाप्त करने में किया जाएगा जिसमें छोटे स्कूलों के शिक्षक आज काम करते हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति* यह भी कहती है कि स्कूल कॉम्पलेक्स की मुख्य ज़िम्मेदारी शिक्षकों की सतत पेशेवर तैयारी का केन्द्र होगी।

उपसंहार में यही कहा जा सकता है कि जन शिक्षा केन्द्रों पर शिक्षकों के साथ शैक्षिक विमर्श के अनुभव उम्मीद जगाते हैं। शिक्षक अपनी कक्षाओं में बेहतर शिक्षण करना चाहते हैं। जन शिक्षा केन्द्र पर कार्य करने के मेरे अनुभव सीमित ही कहे जा सकते हैं। लेकिन अनुभवों से समझ में आया कि स्थानीय स्तर पर जन शिक्षा केन्द्रों पर शैक्षिक विमर्श काफ़ी सार्थक होता है।

कालू राम शर्मा ने लगभग तीन दशक तक शैक्षिक संस्था एकलव्य और विद्या भवन सोसायटी के साथ काम किया है। वे विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शिक्षा, विज्ञान, पर्यावरण और सामाजिक सरोकारों के विषयों पर निरन्तर लिखते रहते हैं। आपने *बुनियादी शिक्षा : एक नई कोशिश* व *खोजबीन* पत्रिकाओं का सम्पादन किया है। आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हैं जिनमें *खोजबीन का आनन्द, अंडे ही अंडे, छोटे जीवों से जान पहचान* और नव साक्षरों के लिए लिखी किताबें प्रमुख हैं। विगत 9 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में काम कर रहे हैं।

सम्पर्क : kr.sharma@azimpremjifoundation.org